बिस्मिल्ला हिर्रहमाननिर्रहीम

प्रिय मित्र

आशा है आप कुशल पूर्वक होंगे। यह एक धार्मिक पत्र है जो आपकी सेवा में भेज रहा **हूँ**। इस पत्र का मकसद आप को आपके जन्म के विषय में बतलाना है और यह ज्ञान देना है कि आप का असली जन्म दाता कौन है ? आपको यह स्वच्छ जीवन और शान्ति से भरा जीवन प्रदान करने वाला और **रोजी** देने वाला कौन है ? इस संसार को चलाने वाला और इस विशाल आकाश और धरती को बनाने वाला सूर्य और चन्द्रमा उगाने वाला रात्रि और दिन को लाने वाला कौन है ? मुझे भरपूर आशा है कि आप इस पत्र को पढ़ कर अवश्य विचार करेंगें और सही मार्ग जानने की कोशिश भी करेंगें।

प्रिय मित्र इस विशाल संसार का इतना बड़ा गोला और इस में विभिन्न प्रकार की अद्रभुत चीज़ें और इसमें रहते बसते जीव जन्तु यह सब के सब एक ऐसे महान मालिक के अधीन और

उसी की आज्ञा का पालन कर रहें हैं उसी के इशारे पर चलते हैं और उसी की गुलाम प्रजा हैं जो मालिक बहुत बड़ी और बहुत बड़ी ताकत वाला है जो जब चाहे जो चाहे जहॉ चाहे जैसे चाहे सब कुछ कर सकता है उसके कार्यों में कोई भी बाध नहीं डाल सकता इस विशाल संसार में उसका कोई भी भाग्यविधाता नहीं उसके **ऊपर** किसी का हुक्म नहीं चलता वह सब का हाकिम है उसने किसी से जन्म नहीं लिया ना ही उस से किसी ने जन्म लिया है! वह अकेला है सब से बेपरवाह है उसके कोई माता पिता नहीं और ना ही उसके बीवी बच्चे हैं वह हमेंशा से है और हमेशा रहेगा उसको कभी मौत नहीं **आयगी** और ना ही उसको कभी नींद या नींद की झपकी ऊंघ आती है वह विशाल शक्तियों का मालिक है उसे हम अल्लाह कहते हैं। इसका अर्थ यह कि जो मालिक इतनी बडी शक्तियों वाला है की सारा संसार उसी का है सब कुछ उसी के

अधीन है तो पूजा पाठ का असली हकदार भी वही है ।

उसी का हक है कि उसी के सामने झुका जाये माथा टेका जाये उसी से विन्ती की जाए **जसी** से मांगा जाए और उसी के लिए अपना जीवन प्रदान कर दिया जाए उसके अलावा किसी भी जीव जन्तु देवी देवता या किसी भी जिन भूत परी को न पूजा जाए न उनसे कुछ मांगा जाए और न ही उनके सामने अपने शीश झुकाये जाये और न ही यह विश्वास रखा जाए की अल्लाह के अलावा कोई कुछ बना बिगाड़ सकता है ।

एक बात ध्यान में रहे कि अल्लाहतआल किसी के रूप में उपस्थित नहीं होता और न वो किसी का रूप धारण करता है।

प्रिय मित्र

अगर आज्ञा दें तो एक बात पूछूँ ? हम कितने भोले और बुद्धु हैं कि हम उन चीज की पूजा करते हैं जिन्हें अल्लाह ने हमारे लिये पैदा किया है हम उन्हें अपना ईश्वर और भगवान

मानते हैं जो खुद हमारे गुलाम हैं उनके अन्दर तनिक भी शक्ति नहीं कि वो हमारा कुछ बना बिगाड़ सकें यहां तक कि अगर खुद उन पर कोई मक्खी बैठ जाए तो वह उसे हंकाल भी नहीं सकते हम कंकर–पत्थर, नदी –नाले, चंद्रमा–सूर्य, गाय–बैल, पेड़–पौधे सब के सामने अपना सिर झुका देते हैं । उनसे बिनती करने लगते हैं उनकी पूजा पाठ और उनके ऊपर चढावे चढाने लगते हैं और उनको अपना ईश्वर दाता और भगवान मानने लगते हैं । भला सोचे तो सही की वो हमें क्या दे सकते हैं ? वो बोल भी नहीं सकते हिल डूल भी नहीं सकते अपना अच्छा–बुरा भी नहीं सोच सकते तो वो हमारा क्या बना बिगाड़ सकते हैं ?

और हमारे भोलेपन की तो हद हो गई कि हम में से एक मनुष्य गड्ढे से मिट्टी निकालता है उसको सडाता है पैरों और हाथों से गुंधता है फिर उससे सरस्वती देवी की या राम सीता या गणेश की मूर्ति **बनाया** है मूर्ति बनाते वक्त देवी की छातियों को गोल करता है उनके गाल

संवारता है और उन्हें कपडा पहना कर बना संवार कर एक स्थान पर रखता है फिर पंडित जी आते हैं और लोग इकट्ठा हो कर उसकी पूजा शुरू कर देते हैं बूंदियां, जलेवियां, नारियल, फूल पत्तियां और रूपये पैसे चढ़ाये जाते हैं देवी से बिन्ती की जाती है वहां सर झुकाए जाते हैं और बहुत सी चीजें की जाती हैं जिनकी जानकारी आपको अवश्य होगी !

प्रश्न यह है कि उस मूर्ति का बनाने वाला कौन है एक आम मनुष्य ही तो है जिसने उसको बनाया सजाया सवांरा तो क्या ? भगवान इतना मजबूर है कि वो हमारा तुम्हारा मोहताज हो फिर मिट्टी की बनाई हुई वो मूर्ति क्या अल्लाह हो सकती है ? वो तो बोल भी नहीं सकती, सुन भी नहीं सकती, देख भी नहीं सकती, चल फिर भी नहीं सकती या उस पर खान पान जो चढाये जाते हैं तो वो उसे खा पी भी नहीं सकती बल्कि अगर उसके मुंह को कुत्ता चाटने लगे तो वो उसे भगा भी नहीं सकती जरा विचार किजिये की अगर वह इतनी ही शक्तिशाली होती

तो खुद व खुद बन जाती वो किसी मनुष्य के बनाने की मोहताज न रहती फिर जिसके अन्दर कुछ भी ताकत न हो अपने हृदय से पूछिये की वो मूर्तियां या देवी–देवता ईश्वर कैसे हो सकते हैं ? जो इतना मजबूर लाचार व बेबस हो वो भगवान कैसे हो सकता है ? भगवान तो बहुत बड़ा है वही सारे संसार का मालिक है धरती और आकाश में जो कुछ भी है सब उसी के अधिकार में कोई भी जीव जो इस धरती पर जन्म लेता है वो उसकी पकड से बाहर नहीं हैं व उसके पैदा होने पलने बढने और मरने तक की जगह को जनता है अल्लाहतआला अपनी किताब में फरमाता है

ऐ लोगों अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करो जिसमें तुम्हें और उन लोगों को जो तुमसे पहले आये थे जन्म दिया ताकि तुम सज्जन पुरूष बन जाओ जिसने तुम्हारे लिये धरती को फर्श तथा आकाश को छत बनाया और उसमें बारिश उतारी फिर उसके माध्यम से फल आदि उत्पन्न किया इसलिये तुम अल्लाहतआला

का भागीदार किसी को न बनाओ यह तुम जानते हो ।

अब आप सोचें कि हम कितने भटके हुए हैं सही मार्ग से कितनी दूर हैं और कितने भेले हैं कि उस अल्लाहतआला को छोड़कर जिसने हमें पैदा किया प्यारी–प्यारी आखें दीं, नाक दी हाथ पैरे दिये, जुबान दी, चलने और काम करने की ताकत दी सोच विचार करने और सही गलत सोचने के लिये बुद्धि दी उस अल्लाहतआला को छोड़कर अपने हाथों की बनाई हुई देवी देवताओं की मूर्तियों और कंकर व पत्थर को अपना ईश्वर बनाकर पूजते है उनके फोटो तक को पूजते हैं उनसे दया की भीक मांगते हैं उनसे अपना दुख दर्द बयान करते हैं और उन्हें अपने भले बुरे का मालिक समझते हैं यह उस अल्लाहतआला के साथ बहुत बड़ा अन्याय है जिसने आपको जन्म दिया और जो आपको आहार देता है !

प्रिय मित्र जो लोग अपने मालिक के गद्दार होते हैं वो किसी के साथ वफा नहीं कर सकते

यही कारण है कि हिन्दू समाज स्पष्ट तौर पर टूटकर बिखर चुका है क्यों कि हिन्दुओं की एक भारी संख्या जो अपने आपको हिन्दू समझती है वो ब्राहम्णवाद के जुल्म व सितम और जात पात की चक्की में पिसते पिसते हिन्दुइज़्म से उक्ता युकी है और ब्रहम्णों के बनाये हुए नियमों को निहायत ही घृणा से देख रही है ।

यह एक कडवा सत्य है कि हिन्दु धर्म कोई धर्म नहीं है बल्कि यह प्राचीन काल में लोगों के **दुख खुद** अपनी बुद्धि से बनाये हुये जीवन गुजरने के नियम हैं । मगर इस्लाम तो यह अल्लाहतआला की अज़ीम नेमत हैं जो उसने सारे संसार के लोगों को तोहफे के तौर पर दिया है यही कारण है कि अल्लाहतआला के इस बनाये हुए नियम में इन्सानों के बीच कोई ऊंच नीच नहीं और न ही कोई जात पात का भेद भाव है और न ही कोई छूत छात है अल्लाहतआला के यहां सब बराबर हैं उसने सबको एक ही मॉ बाप से पैदा किया है उसके यहां कोई छोटा बडा नहीं, उसके यहा

बड़ा वहीं है जो सबसे ज्यादा उसका सम्मान करता हो और उससे डरता हो !

परन्तु आप जरा हिन्दु धर्म पर दृष्टि डालें तो बडा आश्चर्य होता है कि हिन्दु धर्म में किस तरह सारे मनुष्य को चार टुकड़ों में बांट रखा है और यह विश्वास रखा हुआ है कि ब्राहम्ण ने ब्रहम्मा के सिर से जन्म लिया है इसलिये सारे संसार में वही पवित्र और ईश्वर का मित्र है **क्षत्रिये** ब्रहम्मा के भुजाओं से पैदा हुआ है वैष्य ब्रहम्मा की टांगो से पैदा हुआ है शूद्र ब्रहम्मा के निचले पांव से पैदा हुआ है ! इन चारों वर्गो में से हर एक का काम अलग–अलग है ब्रहम्मा को पूरी स्वतंत्रा हासिल है वो चाहे कुछ भी कर सकता है उसको कुछ भी नहीं कहा जायेगा और जिसका भी माल खा ले उसके लिये हलाल है शूद्र ब्रहम्मा की सेवा के लिए जन्म लिया है उसका सब कुछ ब्रहम्मा के लिये है वह उसी का गुलाम है उस बेचारे को पवित्र गीता पढ़ने तक की इजाज़त नहीं उसे मंदिर में पूजा पाठ करने यहां तक कि

उसे अन्दर जाने तक की अनुमति नहीं मिलती उसे अछूत समझा जाता है भला विचार करें कि क्या ईश्वर इस तरह अपनी प्रजाओं पर अत्याचार कर सकता है ? कभी नहीं वह अपने मानने वाले के बीच फर्क नहीं करता वो अल्लाहतआला तो अपने पवित्र कुरआन में यह कहता है !

ऐ लोगों मैनें तुम सब लोगों को पैदा किया है तुम सब के मॉ बाप एक हैं मैनें इसलिये तुम सब को अलग–अलग रखा हुआ है ताकि तुम एक दूसरे से प्रेम और मेल व्यवहार करो याद रखो तुम में मेरा **नजदीक** वही है जो सबसे ज्यादा हमसे डरने वाला है

यह अल्लाहतआला का आदेश और उसका पैगाम और यही है इस्लाम की पुकार

और इस्लाम नाम है अल्लाहतआला के आदेशों का अनुवर्तन और उसका आज्ञापालन करना और इस्लाम शब्द का एक दूसरा अर्थ भी ही सुलह, शांति, कुशलता, संरक्षण, श्रद्धा आदि मनुष्य को वास्तविक शांति उसी समय

मिलती है जब वह अपने आप को अल्लाहतआला को समर्पित कर दें उसी के आदेशों के अनुसार जीवन गुजरने लगे ! ऐसे ही जीवन से दिल को शांति मिलती है और समाज में भी उसी से वास्तविक शांति की स्थापना होती है वास्तव में अगर हम देखें तो दुनिया में जितनी चीजें हैं सब मुसलमान हैं चांद और तारे पृथ्वी और आकाश सूर्य और प्रकाश **पात** और जल आदि यह सब अल्लाहतआला के बनाये हुए नियम और विधि के अधीन हैं क्योंकि अल्लाहतआला ने उनके लिए जो भी मार्ग नियत किया है यह सब उसके तनिक भर खिलाफ नहीं करते ! और मनुष्य भी अगर अपने शरीर में विचार करें तो उसे पता चल जायेगा कि उसके शरीर का एक एक अंग वही काम कर रहा है जो उसके लिये निश्चित है और रीति से कर रहा है जो उसे बता दी गई है !

ये **प्रवल** नियम जिसमें बड़े–बड़े ग्रहों से लेकर भूमि का छोटे से छोटा कण तक जुडा है एक महान शासक का बनाया हुआ नियम है

और पूरी दुनिया उसी शासक के आदेश और उसी की आज्ञा को पालन करती है इसलिये समपूर्ण विश्व का धर्म इस्लाम है ।

प्रिय मित्र **अन्म** में हम आप से यह कहकर अनुमति चाहते है कि आप इस्लाम धर्म को उसके नियमों और आदेशों को पढ़े और विचार करें कि क्या हम वास्तव में अपने मालिक अल्लाहताआला के वफादार है ।

धन्यवाद

आपका मित्र

सय्यद मेराज रब्बानी